प्रश्न—अभिव्यंजनावाद (Expressionism) का विवेचन करते हुये, वक्रोक्ति से उसकी तुलना कीजिये।

रूप-विश्लेषण

वस्तुतः अभिव्यंजनावाद का मूल-स्रोत स्वच्छंदतावाद की वह प्रवृत्ति थी जिसने रूप में तो नव्य स्वर में पर बाद में, उग्र स्वर में प्राचीन मान्य सिद्धान्तों का विरोध किया और सत्रहवीं शताब्दी में तो ड्राइडन ने स्पष्ट रूप से कहा है, इतना ही पर्याप्त है कि अरिस्टाटिल ने कहा था। हमारा युग एक ऐसी पूर्णता को प्राप्त हुआ है, जहाँ तक वे प्राचीन लेखक नहीं पहुँच पाये कदाचित् वे पहुँच भी नहीं सकते थे, क्योंकि प्रत्येक युग की प्रतिभा भिन्न होती है।' कालांतर में अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एडवर्ड यंग ने अपने को जानो (Know thyself) और अपना सम्मान करो (Reverence thyself) का महामन्त्र अपने युग के तरुण साहित्यकारों को देकर उनमें 'अहम्' और वैयक्तिकता का प्रबल उभार भर दिया।' वैयक्तिकता की यह भावना विज्ञान के बढ़ते हुए प्रभाव, चिंतन की नूतन प्रणाली और जीवन के नवीन मूल्यों आदि से निरन्तर पुष्ट होती रही तथा उन्नीसवीं शताब्दी में तो यह भावना चरम रूप से उग्रतर हो गयी कि वास्तविकता को पुनर्प्रस्तुत करना नहीं, अपितु व्यक्तिगत भावना को अभिव्यक्त करना साहित्यकार का काम है। इस प्रवृत्ति का अति-विकसित रूप जिन साहित्यकारों में पाया जाता है, उन्हें अभिव्यंजनावादी माना जाता है और प्रसिद्ध इतालवी दार्शनिक बेनेदेतो क्रोचे (Benedetto Croce) को इस अभिव्यंजनावाद का प्रवर्तक कहा जाता है।

सामान्यतया क्रोचे एक प्रसिद्ध दर्शन मीमांसक था पर उसने दर्शनशास्त्र के अन्तर्गत इतिहास के स्वरूप सौन्दर्यशास्त्र, मार्क्सवादी व्यवस्था और पाश्चात्य कला एवं साहित्य का अपने दृष्टिकोण एवं चिन्ताधारानुसार चिन्तन एवं मनन किया था। कहना अवश्य है कि क्रोचे मुख्यता आत्मवादी दार्शनिक था और उसके विचारों में आदर्शवादी सौन्दर्य दर्शन की चरम परिणति प्राप्त होती है। यहाँ यह स्मरणीय है कि दार्शनिक कांट ने मन एवं बाह्य जगत् के तादात्म्य और समन्वय की बात स्वीकार की इन्द्रियगोचर जगत् की पूर्णतया अवहेलना नहीं की थी और हीगेल ने भी बाह्य

Scanned with CamScanner

जगत् की पूर्णतया उपेक्षा नहीं की थी पर क्रोचे ने मानसिक क्रियाओं को ही एकमात्र मान्यता प्रदान कर, बाह्य उपकरणों को केवल गौण साधन माना है । इसी प्रकार उसने मार्क्स ने स्थूल भौतिक जगत् को ही कुछ माना था मानसिक क्रियाओं को बिल्कुल नगण्य सिद्ध किया था । सारांश यह कि क्रोचे दार्शनिक और सौन्दर्यशास्त्री ही था और उसकी पुस्तक 'एस्थेटिक' सौन्दर्यशास्त्र की पुस्तक है, जो कला के एक विशिष्ट सिद्धान्त को निरूपित करती है तथा उनका यह अभिव्यंजना सिद्धान्त केवल काव्य पर ही लागू नहीं होता बल्कि सभी ललित कलाओं के लिए समान रूप से महत्त्व रखता है । इस प्रकार अभिव्यंजनावाद के अनुसार कवि या कला अपने अन्तर की भावना को बाहर प्रकाशित करता है, बाह्य वस्तु को नहीं और वह यथार्थ का प्रतिलिपिमूलक चित्रण न करके अपने अन्तर की भावना के अनुसार यथार्थ अंकित करता है ।

वस्तुतः क्रोचे आत्मा की मुख्यतया दो क्रियाएँ मानते हैं—(1) सैद्धान्तिक या विचारात्मक और (2) व्यावहारिक । इनमें से व्यावहारिक क्रिया मनुष्य को इच्छा-शक्ति (Will) पर निर्भर रहती है और उसके दो रूप होते हैं—उपयोगी या आर्थिक (Useful or economic) और नैतिक (Moral) । सामान्यतया उपयोगी या आर्थिक क्रिया का स्वरूप स्थूल और प्रत्यक्ष होता है तथा वह योगक्षेम की भावना के साथ-साथ जीवन के पुरुषार्थों से भी सम्बन्धित है और इसके अन्तर्गत कर्मपक्ष आते हैं । इसी प्रकार नैतिक क्रिया आचार शास्त्रानुमत है और वह सत् असत् के विचार से सम्बन्धित होती है तथा मंगल एवं कल्याण की भावना की क्रिया है । साथ ही सैद्धान्तिक या विचारात्मक क्रिया के भी दो प्रकार हैं—स्वयं प्रकाश ज्ञान या सहजानुभूति (Intuitive knowledge) और तर्क ज्ञान (Concept knowledge) । वास्तव में तर्क से प्राप्त ज्ञान का सम्बन्ध निश्चायक बुद्धि एवं पदार्थ बोध से होता है और यह समष्टि या सामान्य का ज्ञान है तथा इससे दर्शन एवं विज्ञान का जन्म होता है । इसके विपरीत सहाजानुभूति या स्वयं प्रकाश ज्ञान का सम्बन्ध व्यष्टि या विशेष पदार्थ से होता है और वह कल्पना द्वारा कला का उत्पादक होता है । साथ ही वह बौद्धिक ज्ञान से स्वतन्त्र और स्वायत्त होता है तथा उसे किसी मार्ग-दर्शन की आवश्यकता भी नहीं है क्योंकि वह एक प्रकार की अलौकिक शक्ति है जो क्षण भर में किसी भावना को अपनाकर उसे आकार, मूर्त एवं सुन्दर रूप प्रदान करती है ।

क्रोचे के कथनानुसार यदि तर्क तक पहुँचने के लिए बुद्धि का सहारा लिया जाता है तो सहज ज्ञान कल्पना द्वारा प्राप्त होता है और यदि सहज ज्ञान बिम्बों की रचना करता है तो तर्क ज्ञान पदार्थ बोध की । साथ ही क्रोचे ने सहज ज्ञान एवं प्रत्यक्ष ज्ञान में विभिन्नता स्पष्ट करते हुए कहा है कि प्रत्यक्ष ज्ञान में न केवल वास्तविकता एवं वास्तविकता के अन्तर का ज्ञान रहता है अपितु देशकाल का ज्ञान का रहता है परन्तु सहज ज्ञान या स्वयं प्रकाश ज्ञान में देशकाल का भेद नहीं रहता और वह केवल प्रत्यक्ष दर्शन तक ही सीमित नहीं है । इसी प्रकार क्रोचे ने मानस व्यापार रूपिणी सत्ता के निम्नलिखित चार स्तर बतलाय हैं, जिनके द्वारा वह अपनी अभिव्यक्ति करती है—(1) सुन्दरा या सौन्दर्य (Beauty), (2) सत्य (Truth), (3) प्रेम (Usefulness) और (4) शिव (Goodness) । इस प्रकार क्रोचे का कहना है कि ज्ञान मन का प्रथम और मुख्य व्यापार उसी के द्वारा क्रिया विभिन्न रूपों में

अपना स्वतन्त्र विस्तार करती है।

वास्तव में क्रोचे ने अभिव्यंजनावाद का सर्वप्रमुख तत्व या मूलाधार सहज ज्ञान या स्वयं प्रकाश ज्ञान ही है और उस पर इस वाद के अन्य तत्व आधारित हैं। इस स्वयं ज्ञान प्रकाश ज्ञान या सहज ज्ञान का क्रोचे ने तुलनात्मक स्पष्टीकरण भी किया है और हेनरी स्काट जेम्स ने इस सम्बन्ध में कहा भी है—

Croce cont asts intuition with impression, sensation, the bare matter of experience; more than mechanism, naturality, passivity. It is the active expression of impressions.

क्रोच का कहना है कि स्वयं प्रकाश ज्ञान प्रभाव, अनुभूति, क्रिया, स्वाभाविकता आदि से भिन्न है और वास्तव में यह प्रभावों की अभिव्यक्ति की जो क्रिया है, उनकी अभिव्यंजना है। इस प्रकार प्रत्येक सत्य स्वयं प्रकाश ज्ञान या सहज ज्ञान की अभिव्यंजना है जो अभिव्यंजना के उद्देश्य में सफल नहीं होता वह स्वयं प्रकाश ज्ञान या सहज ज्ञान अथवा प्रतिनिधि नहीं है बल्कि अनुभूति और स्वाभाविकता है। क्रोचे ने कहा भी है—

Every true intuition of represent is also expression. That which does not objectify itself is not intuition or representation, but sensation and more natural fact The spirit does not obtain intuitions otherwise than by making, forming expressing.

सामान्यतया क्रोचे सहज ज्ञान या स्वयं प्रकाश ज्ञान को संवेदना भिन्न मानता है और वह संवेदनों के अधिक जटिल एवं संयुक्त रूप को भी सहज ज्ञान मानने के पक्ष में नहीं हैं तथा संवेदनों को वह अस्थिर एवं अरूप ही बतलाता है। उसका विचार है कि संवेदन से यांत्रिकता एवं निष्क्रियता लक्षित होती है पर सहानुभूति से एक प्राण शक्ति, क्रियात्मकता प्रकट होती है सहजानुभूति प्रभावी की सक्रिय अभिव्यक्ति ही है। इस प्रकार क्रोचे अभिव्यंजनावाद के निम्नलिखित तत्व मानता है—

(1) **सहजानुभूति या स्वयं प्रकाश ज्ञान या प्रातिभा ज्ञान (Intuition)**—सहजानुभूति या स्वयं प्रकाश ज्ञान से क्रोचे का अभिप्राय मन में स्वयं ही उत्पन्न हुई मूर्त भावना से है और उसका विचार है कि बुद्धि की क्रिया के बिना ही हम जो 'मूर्ति विधान' करते हैं वही 'स्वयं प्रकाश ज्ञान' है और यह आत्मा की निजी क्रिया होने के कारण बौद्धिक ज्ञान, संवेदन एवं प्रत्यक्षीकरण आदि से भिन्न भी है। क्रोचे के कथनानुसार यद्यपि कई बार सहजानुभूति में बौद्धिक ज्ञान समन्वित हो जाता है अथवा बौद्धिक ज्ञान के मूल में भी सहजानुभूति हो सकती है लेकिन दोनों को एक नहीं कहा जा सकता। साथ ही सहजानुभूति अपने रूप (form) के कारण चेतन के विषय से भिन्न है क्योंकि यह रूप की ही अभिव्यंजना है और वास्तव में आकार या बिम्ब की चेतना को स्पष्ट करने वाली वस्तु सहजानुभूति है तथा इस सहजानुभूति का अर्थ हुआ अभिव्यक्ति। कहने का अभिप्राय यह है कि क्रोचे सहजानुभूति या स्वयं प्रकाश ज्ञान को अभिव्यंजना मानता है और यह अभिव्यंजना अन्तर्मन में ही होती है।

(2) **कला (Art)**—क्रोचे सहजानुभूति को ही कला मानता है और उसने कला एवं सहजानुभूति का अभिन्न सम्बन्ध भी माना है तथा उसकी इस अवधारणा का निरूपण करते हुए हेनरी स्कॉट जेम्स ने लिखा भी है—

Scanned with CamScanner